

श्रीमद्भागवत स्कन्ध 8 अध्याय 20: विराट रूप

18 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



वह छोटा ब्राह्मण बालक सभा के समक्ष एक ऐसे रूप में बढ़ता है जो समस्त सृष्टि को धारण किए है — पृथ्वी और आकाश, स्वर्ग और समुद्र, देवता, ऋषि और सभी प्राणी — जबकि बली, जिसे उसने अभी-अभी केवल तीन पग भूमि देनी चाही थी, उस अनन्त भगवान की ओर विस्मय से ऊपर देखते रह जाते हैं।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विङ्गडम् में आपका पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिमयी यात्रा। यह बीसवाँ अध्याय वामन-कथा को आगे बढ़ाता है, अपने गुरु की चेतावनी पर बली के उत्तर और उससे उपजे आश्चर्य को उठाते हुए।

अध्याय की जानकारी

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 8 (आठवाँ स्कन्ध)
- अध्याय: 20 (बीसवाँ अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: बली द्वारा तीनों लोकों का समर्पण एवं भगवान के विश्व-रूप का दर्शन
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित से कहते हुए — बली के वचन सहित
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: नर्मदा के उत्तरी तट पर भृगुकच्छ में बली की यज्ञभूमि
- केन्द्रीय विषय: बली की अटल सत्यनिष्ठा, भूमि का दान, शुक्राचार्य का शाप, भगवान के चरणों का पूजन, और भगवान के विराट रूप एवं उनके महान डगों का प्रकट होना
- प्रमुख श्लोक श्रेणी: स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 1-34
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

उन्नीसवें अध्याय में, बली की उदारता से प्रसन्न होकर, भगवान ने राजा के गौरवशाली वंश की प्रशंसा की और केवल तीन पग भूमि माँगी, बली के अधिक स्वीकार करने के आग्रह का उत्तर सन्तोष की शिक्षा से दिया। हँसते हुए बली ने अपना वचन दिया और व्रत दृढ़ करने के लिए जलपात्र उठाया — तब शुक्राचार्य ने उस वामन को भगवान विष्णु के रूप में पहचान लिया और चेतावनी दी कि यह वचन बली से तीनों लोक छीन लेगा। यह अध्याय बली के उत्तर से आरम्भ होता है।

बली राज्य के ऊपर सत्य को चुनते हैं

अपने कुल के गुरु द्वारा इस प्रकार कहे जाने पर, बली एक क्षण के लिए मौन रहे, और फिर स्थिर मन से अपने गुरु को उत्तर दिया। उन्होंने स्वीकार किया कि बुद्धिमान गृहस्थ का धर्म वस्तुतः यही है कि वह अर्थ, काम, यश और जीविका का ऐसा अनुसरण करे जो उनमें से किसी को हानि न पहुँचाए — किन्तु एक बार ब्राह्मण को दान का वचन देकर, प्रह्लाद के वंश का यह प्रसिद्ध पुत्र धन के लोभ से, किसी ठग की भाँति, कैसे मना कर सकता है? किसी वस्तु से भी उन्हें उतना भय नहीं जितना किसी ब्राह्मण से विश्वासघात करने से।

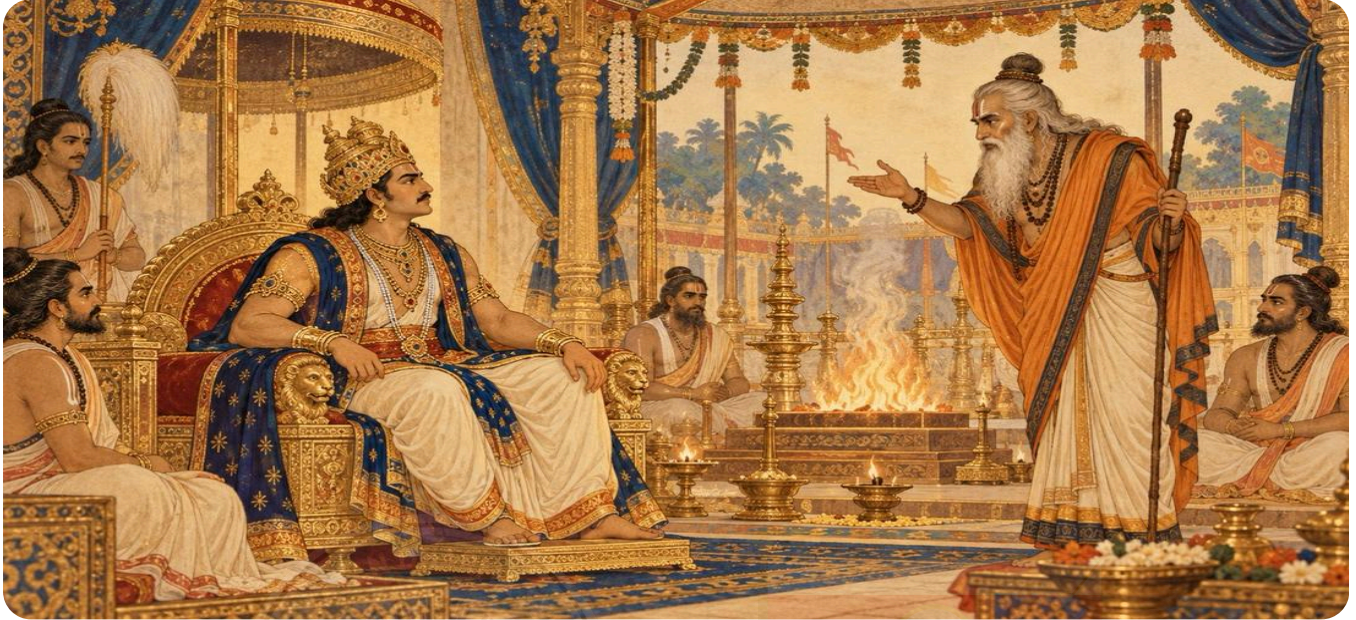
न ह्यसत्यात् परोऽधर्म इति होवाच भूरियम् ।

सर्वं सोढुमलं मन्ये ऋतेऽलीकपरं नरम् ॥ ४ ॥

न ह्यसत्यात् परोऽधर्म इति होवाच भूरियम् सर्वं सोढुमलं मन्ये ऋतेऽलीकपरं नरम्

अर्थ: बली ने कहा — इस पृथ्वी ने स्वयं एक बार घोषित किया था, “असत्य से बड़ा कोई अधर्म नहीं; मैं झूठ बोलने वाले मनुष्य के अतिरिक्त प्रत्येक भार को सहन करने में समर्थ हूँ।” (स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 4)

उन्होंने कहा कि उन्हें नरक, दरिद्रता, दुःख के सागर, अपने पद से पतन, अथवा स्वयं मृत्यु का भी उतना भय नहीं जितना किसी ब्राह्मण को छलने का। जो धन मरते हुए मनुष्य को वैसे भी त्यागना ही पड़ता है, उसे तो जीते-जी मुक्त हाथ से दे देना चाहिए; और जब दधीचि तथा राजा शिबि जैसे पुण्यात्मा दूसरों के हित के लिए अपना शरीर तक दे देते हैं, तो मात्र भूमि देने में क्या संकोच? उन्होंने देखा कि काल ने महानतम दैत्यराजों के भोगों को निगल लिया, किन्तु उनके द्वारा उदारता से अर्जित यश को नहीं।



स्थिर और निर्भय, राजा बली अपने गुरु शुक्राचार्य को उत्तर देते हैं, यह घोषित करते हुए कि वे किसी ब्राह्मण को दिया वचन तोड़ने से अधिक और किसी बात से नहीं डरते, क्योंकि असत्य से बड़ा कोई अधर्म नहीं (श्लोक 2-8)।

शाप के बावजूद दिया गया दान

तब विधि से प्रेरित होकर शुक्राचार्य ने अपने ही उदारचेता शिष्य को उनकी आज्ञा की अवहेलना के लिए शाप दिया — बली से कहा कि जो घमण्डी मूर्ख वे बन गए हैं, वे शीघ्र ही अपने उच्च पद से गिर जाएंगे। फिर भी अपने गुरु के शाप के अन्तर्गत भी वह महान आत्मा सत्य से विचलित न हुई।

बली की इस मूक अवज्ञा के पीछे एक गहरा सिद्धान्त छिपा है। गुरु का सच्चा कर्तव्य शिष्य को भगवान की प्रेममयी सेवा की ओर ले जाना है; जब गुरु स्वयं शिष्य और उस सेवा के मध्य आ खड़ा हो, तो उसकी आज्ञा शिष्य पर बाध्यकारी नहीं रह जाती, चाहे उसका आसन कितना भी पूजनीय क्यों न हो। शुक्राचार्य, अपनी सारी विद्वत्ता के बावजूद, यहाँ धन, यश और मान-मर्यादा की रक्षा करने वाले पुरोहित की भाँति बोले, न कि उस गुरु की भाँति जो अपने शिष्य की भक्ति को फलते-फूलते देखना चाहता हो। बली ने अपने गुरु के आसन का अनादर नहीं किया — उत्तर देने से पहले की उस चुप्पी में ही वे यह समझ चुके थे कि विष्णु के प्रति समर्पण से बड़ी कोई आज्ञा नहीं हो सकती, चाहे उसका अधिकार कितना ही प्राचीन क्यों न हो (श्लोक 1-2, 14-16)।

एवं शप्तः स्वगुरुणा सत्यान्न चलितो महान् ।

वामनाय ददावेनामर्चित्वोदकपूर्वकम् ॥ १६ ॥

एवं शप्तः स्वगुरुणा सत्यान्न चलितो महान् वामनाय ददावेनामर्चित्वोदकपूर्वकम्

अर्थ: अपने ही गुरु द्वारा इस प्रकार शापित होने पर भी वह महान आत्मा सत्य से विचलित न हुई; और भगवान की पूजा करके तथा दान को दृढ़ करने के लिए जल छोड़कर, उन्होंने वह भूमि दिव्य वामन को अर्पित कर दी। (स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 16)

तब बली की पत्नी विन्ध्यावली, जो मोतियों के हार से सुशोभित थीं, आगे आई और भगवान के चरण धोने के लिए जल से भरा एक स्वर्ण कलश ले आई।

यजमानः स्वयं तस्य श्रीमत् पादयुगं मुदा ।

अवनिज्यावहन्मूर्ध्नि तदपो विश्वपावनीः ॥ १८ ॥

यजमानः स्वयं तस्य श्रीमत् पादयुगं मुदा अवनिज्यावहन्मूर्ध्नि तदपो विश्वपावनीः

अर्थ: यज्ञ के कर्ता बली ने स्वयं आनन्दपूर्वक भगवान के श्रीयुक्त चरणों को धोया और उस जल को, जो समस्त ब्रह्माण्ड को पवित्र करने में समर्थ है, अपने ही मस्तक पर धारण किया। (स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 18)



अपनी रानी विन्ध्यावली द्वारा स्वर्ण कलश लाए जाने पर, राजा बली स्वयं दिव्य वामन के चरण धोते हैं और उस सर्व-पावन जल को अपने मस्तक पर धारण करते हैं, उस दान को दृढ़ करते हुए जो उन्होंने अपने गुरु के शाप के बावजूद दिया है (श्लोक 16-18)।

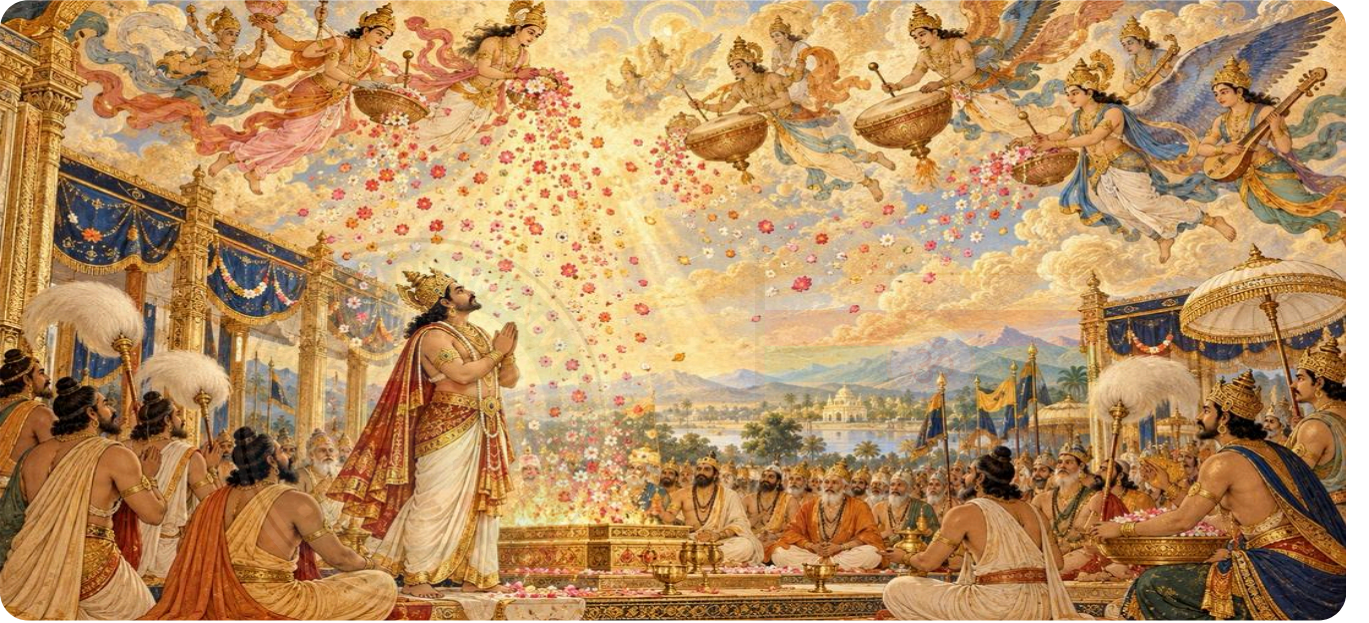
स्वर्ग उदार राजा की प्रशंसा करता है

यह देखकर, स्वर्ग में देवताओं के समूह — गन्धर्व, विद्याधर, सिद्ध और चारण सहित — ने बली के इस कर्म और उनकी सरलता की प्रशंसा की और, यद्यपि वे उनके शत्रु थे, असुरराज पर आनन्द से पुष्पों की वर्षा की। सहस्रों दुन्दुभियाँ बारम्बार बज उठीं, और आकाशीय गायकों ने इस आश्चर्य का गान किया कि इस उदार आत्मा ने जान-बूझकर अपने शत्रु को तीनों लोक दे दिए।

नेदुर्मुहुर्दुन्दुभयः सहस्रशो
गन्धर्वकिम्पूरुषकिन्नरा जगुः ।
मनस्विनानेन कृतं सुदुष्करं
विद्वानदाद् यद् रिपवे जगत्त्रयम् ॥ २० ॥

नेदुर्मुहुर्दुन्दुभयः सहस्रशो गन्धर्वकिम्पूरुषकिन्नरा जगुः मनस्विनानेन कृतं सुदुष्करं विद्वानदाद् यद् रिपवे जगत्त्रयम्

अर्थ: सहस्रों दुन्दुभियाँ बारम्बार बज उठीं, जबकि गन्धर्व, किम्पुरुष और किन्नर गा उठे: “इस उदार आत्मा ने एक अत्यन्त दुष्कर कर्म किया है, जिसने भली-भाँति जानते हुए भी अपने शत्रु को तीनों लोक दे दिए।” (स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 20)



देवता, गन्धर्व और आकाशीय प्राणी बली पर पुष्पों की वर्षा करते हैं और उनके सम्मान में दुन्दुभियाँ बजाते हैं, उस असुरराज की प्रशंसा करते हुए जिसने जान-बूझकर अपने शत्रु को तीनों लोक दे दिए (श्लोक 19-20)।

वामन विराट रूप में परिणत होते हैं

तब, उसी क्षण, अनन्त भगवान का वह छोटा रूप — जो अपने भीतर तीन गुणों और समस्त सृष्टि को धारण किए था — एक विस्मयकारी सीमा तक बढ़ने लगा।

तद् वामनं रूपमवर्धताद्भुतं
हरेरनन्तस्य गुणत्रयात्मकम् ।
भूः खं दिशो द्यौर्विवराः पयोधय-
स्तिर्यङ्मृदेवा ऋषयो यदासत ॥ २१ ॥

तद् वामनं रूपमवर्धताद्भुतं हरेरनन्तस्य गुणत्रयात्मकम् भूः खं दिशो द्यौर्विवराः पयोधय- स्तिर्यङ्मृदेवा ऋषयो यदासत

अर्थ: अनन्त भगवान का वह वामन रूप विस्मयकारी रूप से बढ़ा, तीन गुणों को अपने में समेटते हुए; और उसमें पृथ्वी, आकाश, दिशाएँ, स्वर्ग, पाताल-लोक, समुद्र, तथा सभी प्राणी — पशु, मनुष्य, देवता और ऋषि — अपना स्थान पा गए। (स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 21)

उस असीम शक्तियों वाले भगवान के शरीर में, बली ने, ऋत्विजों, आचार्यों और यज्ञ-सभा के सदस्यों सहित, समस्त ब्रह्माण्ड को देखा। उस विराट रूप में उन्होंने भगवान के चरणतल में पाताल-लोकों को, चरणों में पृथ्वी को, जंघाओं में पर्वतों को, घुटनों में पक्षियों को, और जाँघों में वायु के अधिष्ठाता देवगणों को देखा। उन्होंने भगवान के कटि-प्रदेश में प्रजापतियों को, नाभि में अन्तरिक्ष को, पार्श्वों में सातों समुद्रों को, और वक्ष पर नक्षत्रों के समूह को देखा। और ऊपर उन्होंने भगवान के हृदय में धर्म को, मन में चन्द्रमा को, वक्षस्थल पर कमलहस्ता श्री देवी को, कण्ठ में पवित्र सामगान को, भुजाओं में इन्द्र आदि देवताओं को, कानों में दिशाओं को, केशों में मेघों को, नेत्रों में सूर्य को, और वाणी में वेदों को देखा। बली ने आगे यह भी देखा कि इस संसार की छाया एवं कठिन वस्तुओं को भी भगवान में ही स्थान मिला है: उनके ललाट पर क्रोध, अधरों पर लोभ, स्पर्श में काम, पीठ पर अधर्म, और उनकी चाल में ही यज्ञ का तेज; मृत्यु उनकी छाया में बसती थी, और माया उनकी मुस्कान में क्रीड़ा करती थी, जबकि प्रत्येक औषधि, नदी और शिला का उद्गम उनके रोम, नाड़ियों और नखों में था। ब्रह्मा, देवगण और महर्षिगण तक उनकी बुद्धि में विराजमान थे, और सृष्टि का हर चर-अचर प्राणी उनके अंगों में स्पन्दित हो रहा था — यहाँ तक कि उस एक ही दर्शन में समस्त ब्रह्माण्ड, उसका प्रकाश और उसकी छाया दोनों, भगवान के शरीर में प्रकट हो उठे (श्लोक 22-29)।

दो महान डग

समस्त ब्रह्माण्ड को सर्व-धारक भगवान में देखकर असुर भय से व्याकुल हो उठे। भगवान के अपने दिव्य आयुध और पार्षद साक्षात् रूप में प्रकट हुए — असह्य तेज वाला उनका सुदर्शन चक्र, मेघ-गर्जन-सा नाद करता उनका पाञ्चजन्य शंख, उनकी कौमोदकी गदा, उनका धनुष, उनकी तलवार, और सुनन्द आदि प्रमुख पार्षद। मुकुट, बाजूबन्द और चमकते कुण्डलों से देदीप्यमान, श्रीवत्स तथा कौस्तुभ मणि से अंकित, और वनमाला से विभूषित वह विशाल डग भरने वाले भगवान वैभव में जगमगा उठे। एक ही डग से उन्होंने बली की पृथ्वी को नाप लिया, अपने शरीर से आकाश को और अपनी भुजाओं से दिशाओं को ढँक लिया। फिर उन्होंने दूसरे डग के लिए अपना चरण उठाया।

पदं द्वितीयं क्रमतस्त्रिविष्टपं

न वै तृतीयाय तदीयमण्वपि ।

उरुक्रमस्याङ्घ्रिरुपर्युपर्यथो

महर्जनाभ्यां तपसः परं गतः ॥ ३४ ॥

पदं द्वितीयं क्रमतस्त्रिविष्टपं न वै तृतीयाय तदीयमण्वपि उरुक्रमस्याङ्घ्रिरुपर्युपर्यथो महर्जनाभ्यां तपसः परं गतः

अर्थ: जब उन्होंने अपना दूसरा डग भरा, तो स्वर्ग ढँक गया, और तीसरे के लिए एक अणु भर भी स्थान शेष न रहा; क्योंकि विशाल डग भरने वाले भगवान का चरण ऊपर, और ऊपर उठता गया, महर्लोक और जनलोक को पार करते हुए, तपोलोक से भी परे। (स्कन्ध 8, अध्याय 20, श्लोक 34)



विशाल डग भरने वाले भगवान, मुकुट, चक्र, शंख और गदा से देदीप्यमान, एक विराट डग से पृथ्वी को और दूसरे से स्वर्ग को नाप लेते हैं, यहाँ तक कि तीसरे डग के लिए एक अणु भर भी स्थान शेष नहीं रहता (श्लोक 30-34)।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. सत्यनिष्ठा प्रभुत्व से भी प्रिय है। यह चेतावनी मिलने पर कि उनका वचन उन्हें तीनों लोक खो देगा, बली तनिक भी नहीं हिचकते; वे किसी ब्राह्मण को छलने से नरक, दरिद्रता या स्वयं मृत्यु से भी अधिक डरते हैं, यह मानते हुए कि असत्य से बड़ा कोई अधर्म नहीं (श्लोक 3-5)।
2. जो गुरु भक्ति के मार्ग को रोके, वह आज्ञापालन का अधिकार खो देता है। शुक्राचार्य का शाप बली को विचलित नहीं कर पाता, क्योंकि वे पहले ही समझ चुके हैं कि गुरु का अधिकार वहीं समाप्त हो जाता है जहाँ भगवान के प्रति निष्ठा आरम्भ होती है (श्लोक 14-16)।
3. प्रेममयी सेवा आनन्द से अर्पित की जाती है, अनिच्छा से नहीं। बली और उनकी रानी विन्ध्यावली भगवान के चरण आनन्द से धोते हैं और उस पवित्र जल को मस्तक पर धारण करते हैं, यह दिखाते हुए कि समर्पण, जब सच्चा हो, तो आनन्द से पूर्ण होता है (श्लोक 17-18)।
4. शत्रु भी सच्चे सद्गुण का सम्मान करते हैं। देवता, यद्यपि बली के शत्रु थे, उन पर पुष्पवर्षा और प्रशंसा करते हैं, क्योंकि सच्ची उदारता मित्र और शत्रु के भेद से परे आदर की अधिकारिणी है (श्लोक 19-20)।
5. भगवान समस्त सृष्टि को धारण किए हैं। विराट रूप में समस्त ब्रह्माण्ड — लोक, प्राणी और शक्तियाँ — भगवान के शरीर में विराजमान दिखते हैं, यह प्रकट करते हुए कि सब कुछ उन्हीं में जीता और गतिमान है (श्लोक 21-29)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अध्याय के हृदय में एक दिव्य विडम्बना है। एक राजा मानता है कि वही दाता है और भगवान याचक; वह एक छोटे बालक को थोड़ी-सी भूमि देना चाहता है। और फिर वह छोटा बालक बढ़ता है, और वह समस्त पृथ्वी जिसे बली समझता था कि वह दे रहा है, प्रकट होती है कि वह तो पहले से ही उसके एक ही चरण में समाई है जिसकी वह सहायता करना चाहता था। दाता पाता है कि वह सदा से ही ग्रहणकर्ता था। फिर भी भगवान बली को लज्जित करने के लिए नहीं झुकाते — वे उसे मुक्त करने के लिए झुकाते हैं। जो कुछ भी बली अर्पित करता है, वह स्वेच्छा से

अर्पित करता है, और जो कुछ वह संसार की दृष्टि में खोता है, वह स्वर्ग की दृष्टि में पाता है, जो उसके राज्य के फिसलते हुए भी उस पर पुष्प बरसाता है। यही इस विराट रूप में छिपी शान्त शिक्षा है: कि हमारे पास ऐसा कुछ नहीं जिसे हम वस्तुतः दे सकें, क्योंकि सब कुछ पहले से ही भगवान में विराजमान है; और कि वे केवल वही भेंट चाहते हैं जो बली इतने आनन्द से देता है — एक सत्यनिष्ठ हृदय, जो तीनों लोकों को रखने से अधिक भगवान से विश्वास निभाना चाहे।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, भगवान से एक वचन करें और उसे निभाएँ, चाहे वह कितना ही छोटा हो — प्रार्थना का एक निश्चित समय, जपने के लिए एक नाम, बिना चूके अर्पित की जाने वाली एक कृपा। जब उसे निभाना असुविधाजनक लगे, तो बली का स्मरण करें, जिन्होंने शाप के अन्तर्गत और अपने राजमुकुट की क्रीमत् पर भी अपना वचन निभाया, और अपनी दृढ़ता को ही अपनी पूजा बनने दें। जैसे ही आप अपने संकल्प का सम्मान करें, उसे भगवान के चरणों में इन शब्दों के साथ अर्पित करें — “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” यह विश्वास करते हुए कि पूर्णतः भगवान को समर्पित एक सत्यनिष्ठ हृदय उन्हें तीनों लोकों के समस्त कोषों से भी प्रिय है।

उपसंहार

बीसवाँ अध्याय वामन-कथा का मोड़-बिन्दु है: यह चेतावनी मिलने पर कि उनका वचन उन्हें सब कुछ खो देगा, बली ने सिंहासन से बढ़कर सत्य को थामे रखा, और वह छोटा वामन, जिसे वे मात्र कुछ पग भूमि देना चाहते थे, इतना बढ़ गया कि समस्त ब्रह्माण्ड ही उनमें विराजमान दिखने लगा। उनकी यह दृढ़ता सिखाती है कि कोई भी भगवान को वह वस्तु वास्तव में नहीं देता जो पहले से उनकी न हो; उन्हें प्रसन्न वही करता है जो वचन निभाने की निष्ठा में निहित है। यही समझ हमें अगले अध्याय के लिए तैयार करे, जहाँ भगवान का तीसरा चरण अभी पड़ना शेष है।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), आठवाँ स्कन्ध, बीसवाँ अध्याय, पृष्ठ 816–820।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज़्डम • बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, निष्ठावान पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा भाष्य का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के साथ किसी सम्बन्ध अथवा उसके अनुमोदन का कोई अभिप्राय नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-8-chapter-20-bali-surrenders-the-universe-cosmic-form-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट

